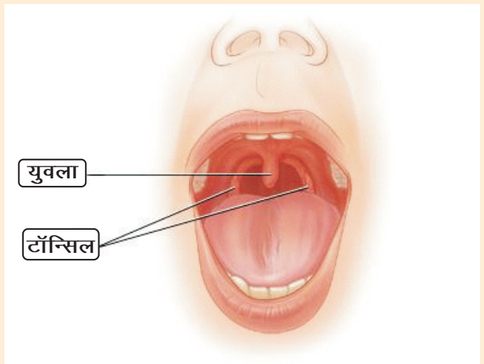

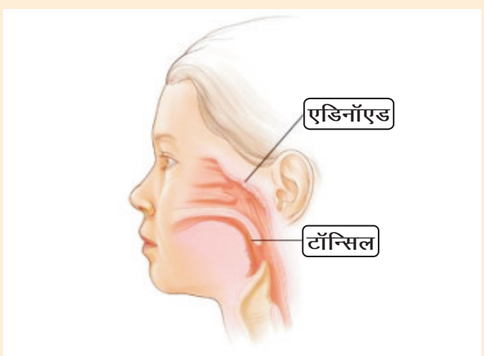

होम्योपैथिक उपचार में सामान्य हिदायतें :

1. इस पत्रिका में निर्देशित औषधियों का उपयोग उसी अवस्था में करना चाहिए जब दिए गए लक्षण रोगी के लक्षणों से मेल खाते हों।
2. औषधि की मात्रा – प्रत्येक तीन घण्टे के बाद 40 नम्बर की 3 गोलियाँ चूस लें अथवा सादे पानी में घोल कर लें।
3. औषधि का सेवन मुँह साफ करके करें और बेहतर होगा कि खाली पेट लें।
4. यदि औषधि सेवन के 24 घंटे की अवधि में आराम आ जाए तो औषधि का सेवन बंद कर दें।
5. यदि औषधि सेवन के बाद 24 घंटे में आराम न आए अथवा लक्षणों में वृद्धि हो तो होम्योपैथिक चिकित्सक की सलाह लें।
6. औषधियों को तेज गन्ध वाली वस्तुओं जैसे कपूर तथा मेंथाल इत्यादि से दूर रखें।
7. औषधियों को ठंडे एवं शुष्क स्थान पर रखें और धूप एवं गर्मी से दूर रखें।
8. औषधियों को बच्चों की पहुँच से दूर रखें।

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्
(भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन गठित स्वशासी निकाय)
जवाहर लाल नेहरू भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथिक अनुसंधान भवन,
61–65 संस्थागत क्षेत्र, डी–ब्लॉक के सामने, जनकपुरी, नई दिल्ली–110058
फोनः 91–11–28521162, 91–11–28525523 फैक्सः 91–11–28521060
ईमेल : ccrh@del3.vsnl.net.in वेबसाइट : www.ccrhindia.org

Homoeopathy for Healthy Mother and Happy Child
Nationwide campaign and three tier workshop at national, state and district levels

होम्योपैथी द्वारा
मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य रक्षा हेतु
राष्ट्रीय अभियान

बच्चों में टॉन्सिलाईटिस एवं एडिनॉएड वृद्धि का होम्योपैथिक उपचार

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी चिकित्सा विभाग (आयुष)
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्
(भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन गठित स्वशासी निकाय)

बच्चों में टॉन्सिलाईटिस एवं एडिनॉएड वृद्धि

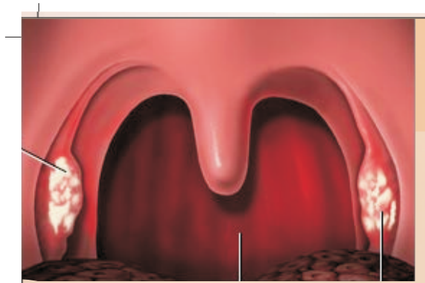

टॉन्सिलाईटिस :

गले में स्थित टॉन्सिल, श्वसन तंत्र के संक्रमण से सुरक्षा प्रदान करते हैं।

टॉन्सिलाईटिस में, संक्रमण के कारण, टॉन्सिल सूज जाते हैं तथा गले में दर्द महसूस होता है।

बच्चों में यह समस्या आम रूप से होती है तथा अधिकतर श्वसन तंत्र के किसी अन्य संक्रमण के साथ होती है।

कारण :

3 वर्ष से कम आयु में : अधिकांश वायरस से संक्रमण

3 वर्ष से अधिक आयु में : अधिकांश बैक्टीरिया से संक्रमण

कारखानों आदि से उठने वाला धूआँ तथा भाप आदि इस रोग में वृद्धि कर सकते हैं।

लक्षण एवं चिन्ह :

गले में दर्द होना।

टॉन्सिलों का बढ़ जाना। (टॉन्सिलों के आकार में वृद्धि होना।)

आवाज का भारी हो जाना।

शरीर में दर्द होना।

ज्वर अथवा बुखार होना।

निगलते हुए गले में दर्द होना, जिसके कारण बच्चा खाना नहीं खाता।

गले की ग्रंथियों का बढ़ना तथा उनमें छूने पर दर्द होना।

क्या करें :

नमक वाले गुनगुने पानी से गरारे करें।

गर्म पानी की भाप लें।

बच्चे को पूर्ण रूप से आराम कराएं।

बच्चे को नरम खाद्य पदार्थ जैसे दलिया, खिचड़ी आदि दें।

क्या न करें :

बच्चे को ठंडे खाद्य तथा पेय पदार्थ न दें।

बच्चे को ठंडे, नमी वाले तथा अधिक भीड़ वाले स्थान पर न ले जाएं।

होम्योपैथी किस तरह लाभदायक है?

शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है।

आगे होने वाली प्रकोप की तीव्रता तथा बारंबारता में कमी करती है।

औषधियों के कोई दुष्प्रभाव नहीं होते।

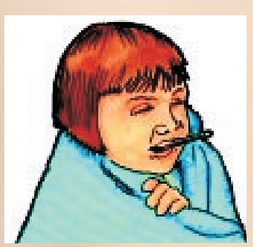

निम्नलिखित होम्योपैथिक औषधियाँ एक्यूट (तीव्र) टॉन्सिलाईटिस के प्राथमिक उपचार के लिए प्रयोग की जाती हैं। परन्तु किसी भी औषधि के प्रयोग से पहले किसी योग्य चिकित्सक की सलाह अवश्य लें।

लक्षण	औषधि
तीव्र टॉन्सिलाईटिस की प्रारम्भिक अवस्था में लाभदायक है। गले में दाईं ओर दर्द होना। पेय पदार्थ निगलने में कष्ट होना। दाईं ओर के टॉन्सिल के आकार में वृद्धि होना।	***बैलाडोना 30***
गले में कांटे चुभने जैसा तीव्र दर्द । गले का छूने (स्पर्श) तथा ठंडी हवा के प्रति संवेदनशील होना। निगलते समय गले की दर्द का कान की ओर जाना।	***हीपर सल्फ्यूरिकम 30***
टॉन्सिल में दर्द एवं सूजन होना। गले में कुछ फँसे होने का अहसास होना। गले की दर्द का कान की ओर जाना। ठोस पदार्थों की अपेक्षा तरल पदार्थ निगलने में अधिक कष्ट होना। खाते समय की तुलना में कुछ न निगलते समय गले में पीड़ा अथवा दर्द होना।	***इग्नेशिया 30***

पीछे दिए गए निर्देशों का पालन करें

एडिनॉइड्स का बढ़ना

एडिनॉइड्स नामक ग्रन्थियाँ गले तथा नाक के पिछली ओर स्थित होती हैं अतः प्रत्यक्ष रूप से नहीं देखी जा सकतीं। संक्रमण के कारण इनके आकार में वृद्धि हो जाती है और यह बढ़कर एक छोटी गेंद (पिंग पाँग बॉल) का आकार तक ले सकती हैं जिसके कारण नाक से साँस लेने में कठिनाई आ सकती है।

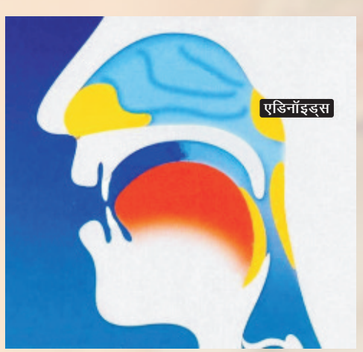

कारण :

संक्रमण : वायरस या बैक्टीरिया का संक्रमण।

ऐलर्जी

लक्षण एवं चिन्ह :

नाक बंद होना।

साँस लेने में कठिनाई होने के कारण बच्चे का मुँह खुला रहना।

साँस लेते समय आवाज होना।

नाक से स्त्राव के कारण नाक का गीला रहना।

आवाज में परिवर्तन आना। (नासिका ध्वनि होना)

नाक बंद होने के कारण खाना खाने में कष्ट होना।

कानों में दर्द अथवा सुनने में कमी आ सकती है।

होम्योपैथी इस समस्या में किस प्रकार लाभदायक है ?

निम्नलिखित होम्योपैथिक औषधियाँ बढ़े हुए एडिनॉइड्स के उपचार में प्रयोग की जाती हैं। परन्तु किसी भी औषधि के प्रयोग से पहले किसी योग्य चिकित्सक की सलाह अवश्य लें।

लक्षण	औषधि
बढ़े हुए एडिनॉइड् ग्रन्थि के कारण, नाक बंद होने का आभास होना। मुँह से साँस लेना। जल्दी जल्दी जुकाम होने की प्रवृति। सुनाई देने में कठिनाई होना (कमी आना)।	***एग्रैफिस न्यूटन्स 30***
नाक से गाढ़ा, चिपचिपा तथा पीला बलगम। नाक के पीछे की ओर से गले में बलगम गिरना। बार–बार नाक साफ करने की इच्छा होना। सुनाई देने में कठिनाई होना (कमी आना)।	***हाइड्रैस्टिस 30***
कमज़ोर तथा एनीमिक बच्चे (जिनमें खून की कमी हो) जो जल्दी चिड़चिड़े तथा उत्तेजित हो जाते हों। हाथ पैर ठंडे रहना। कमज़ोर पाचन तंत्र तथा बार–बार उल्टी होना। सुनाई देने में कठिनाई होना (कमी आना)।	***कैल्केरिया फॉस्फोरिका 30***

पीछे दिए गए निर्देशों का पालन करें